रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– Kanpur City – 67/2015–2017

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :– ,
सम्पादक, इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट, 127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –39 ● अंक –21 ● कानपुर 1 से 15 नवम्बर 2017 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य – ₹ 100

आवश्यक सूचना

समस्त इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों को सूचित किया जाता है कि वे अपना ई–मेल आई0डी0 व मोबाईल नं0 कार्यालय को प्रेषित करें ताकि उन्हें नवीनतम सूचनायें E-mail अथवा S.M.S. के माध्यम से भेजी जा सके। रजिस्ट्रार
registrarbchmup@gmail.com

W.H.O. के इशारे पर सरकार कर रही है काम

पूरे विश्व में रहने वाले सभी नागरिकों को उच्च स्तरीय चिकित्सा सुविधायें प्राप्त हों इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये कमोबेश सभी देश की सरकारें अपने–अपने स्तर से कार्य कर रही हैं।

एक युग था जब सम्पूर्ण विश्व में आयुर्वेद का बोल–बाला था और सभी प्रणी आयुर्वेद की औषधियों का लाभ लेते थे, धीरे–धीरे जागरुकता बढ़ी, लोगों के ज्ञान में वृद्धि हुयी, लोगों ने विभिन्न क्षेत्रों में शोध कार्य करने प्रारम्भ किये परिणामोंस्वरुप कुछ नई पद्धतियों ने जन्म भी लिया इसमें यूनानी और एलोपैथी प्रमुख रुप से आगे आयीं, प्रारम्भ में इन दोनों पद्धतियों के क्षेत्र सीमित थे शनै–शनै एलोपैथी का प्रभाव बढ़ने लगा विश्व के जिन–जिन क्षेत्रों में अंग्रेजों ने अपना साम्राज्य स्थापित किया वहां पर अपनी शिक्षा प्रणाली एलोपैथी चिकित्सा पद्धति का व्यापक प्रचार व प्रसार किया।

अट्ठारहवीं शताब्दी में कई पद्धतियों और थेरेपियों ने जन्म लिया इनमें होम्योपैथी, इलेक्ट्रो होम्योपैथी व एक्युपंक्चर अपना प्रभाव डालने में काफी हद तक सफल रहीं, होम्योपैथी और इलेक्ट्रो होम्योपैथी का प्रादुर्भाव जर्मनी में हुआ, एक्युपंक्चर चीनी चिकित्सा पद्धति है, पर धीरे–धीरे इनका प्रसार विश्व के काफी बड़े क्षेत्र में हो गया, भारतवर्ष में भी इन पद्धतियों ने अपने पैर जमाये और लोगों में अपना विश्वास अर्जित किया परन्तु अन्य किसी पद्धति ने उतना विकास नहीं किया जितना एलोपैथी ने किया, इसका एकमात्र कारण यह था कि अंग्रज़ों ने अपने साम्राराज्य में अन्य पद्धतियों को विकसित नहीं होने दिया और न ही शोध कार्य में सहयोग किया, उन्होंने यह भी प्रयास किया कि अन्य चिकित्सा पद्धतियों के चिकित्सक एन–केन–प्रकारेण एलोपैथी का प्रयोग करें।

परिणामतः अन्य चिकित्सा पद्धतियों का क्षरण व एलोपैथी का विकास होता गया तभी स्वास्थ्य के लिये एक विश्व स्तरीय संगठन का गठन किया गया जिसका नाम विश्व स्वास्थ्य संगठन दिया गया, जिसे हम "हू" के नाम से भी जानते हैं, आज यह विश्व का सबसे बड़ा स्वास्थ्य संगठन है और विश्व के लगभग सभी देश इस संगठन के सदस्य हैं, वर्तमान में इस संगठन का मुख्यालय जेनेवा में है, इस संगठन से जुड़े सभी सदस्य इसकी नीतियों का अनुपालन करते हैं और समय–समय पर होने वाली बैठकों में सम्मिलित भी होते हैं और नवीनतम जानकारियों से एक दूसरे को परिचित कराते हैं और स्वंय भी परिचित होते हैं।

- ✓ W.H.O. सबसे बड़ा संगठन
- ✓ विश्व मानता है इसकी बात
- ✓ ई0 हो0 के लिये भी निर्देश
- ✓ वैकल्पिक पद्धतियों को बढ़ावा
- ✓ होम्योपैथी से प्रतिस्पर्धा नहीं
- ✓ अब तय हो ही जायेगा विषय

विश्व स्वास्थ्य संगठन के पास बहुत बड़ा कोष भी है उस कोष का उपयोग विश्व के उन देशों में स्वास्थ सुविधाओं के लिये किया जाता है जहां गरीबी और अशिक्षा है, आज देश दो तरह के हैं एक विकसित और दूसरा विकासशील, जो देश विकसित हैं उनके पास सभी संसाधन उपलब्ध हैं और जो विकासशील हैं वे देश या तो संसाधन जुटाते हैं या फिर विश्व स्वास्थ्य संगठन से सहायता प्राप्त करते हैं, आज जब पूरे विश्व में एलोपैथी का बोल–बाला है ऐसे में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने ऐसी चिकित्सा पद्धतियों के उन्नयन की रुप रेखा बनायी है जो पारम्परिक हैं ऐसी चिकित्सा पद्धतियों को वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों का नाम दिया गया है।

भारत वर्ष में वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों की श्रेणी में आयुर्वेद, यूनानी, सिद्धा, होम्योपैथी, योगा, नेचुरोपैथी व सोवा–रिग्पा हैं, इलेक्ट्रो होम्योपैथी भी इसी श्रेणी में आती है चूंकि भारत वर्ष में चिकित्सा पद्धतियों की शासकीय मान्यता की व्यवस्था है, इस देश में वही चिकित्सक अधिकारिक माना जाता है जो मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों की श्रेणी में आते हैं, वैसे तो भारत में कुछ अन्य पद्धतियां व थेरेपियां भी उपयोग में लायी जाती हैं जिसमें इलेक्ट्रो होम्योपैथी अधिकारिक चिकित्सा पद्धतियों की श्रेणी में आती है। इस अधिकारिक चिकित्सा पद्धति को मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों की श्रेणी में लाने का कार्य प्रारम्भ हो चुका है विश्व स्वास्थ्य संगठन के एजेण्डे में शामिल विषय कि हर देश अपने यहां प्रचलित होने वाली चिकित्सा पद्धतियों का विकास करे और जिस राष्ट्र में जो कानून हो उस कानून के आधार पर उन पद्धतियों को भी संरक्षण प्रदान किया जाये जो जनता के स्वास्थ्य लाभ में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन कर रहे हैं। भारत सरकार विश्व स्वास्थ्य संगठन के एजेण्डे पर ही कार्य कर रही है, भारत सरकार द्वारा जारी 28 फरवरी, 2017 का पत्र उसी की एक बानगी है।

चीन के बाद विश्व की सबसे बड़ी आबादी वाला देश भारत है जहां लगभग एक सौ पच्चीस करोड़ भारतीय निवास करते हैं, इस देश में जन स्वास्थ्य के लिये विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा प्रायोजित बहुत सारे कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं, पोलियो, टीकाकरण आदि इसी अभियान का एक हिस्सा है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी भारत वर्ष में पिछले करीब डेढ़ सौ वर्षों से कार्य कर रही है लगभग पच्चीस लाख चिकित्सक पूरे देश में इस चिकित्सा पद्धति से जनता की सेवा कर रहे हैं सरकार को और विश्व स्वास्थ्य संगठन को इस बात की पूरी जानकारी भी है, तभी तो विश्व स्वास्थ्य संगठन के एजेण्डे पर कार्य करते हुये भारत सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी को नियमितिकरण करने का पूरा मन बना लिया है।

भारत सरकार ने सभी लोगों से एक प्रपोज़ल के रुप में कुछ जानकारियां प्राप्त करनी चाही हैं उसके पीछे एकमात्र लक्ष्य यही है कि सरकार के पास जो डाटा उपलब्ध हैं उनकी सत्यता कितनी एवं क्या है ? सरकार यह भी जानना चाहती है कि विभिन्न संस्था संचालकों के द्वारा जो यह दावा किया जा रहा है कि पच्चीस लाख चिकित्सक इलेक्ट्रो होम्योपैथी से चिकित्सा व्यवसाय कर रहे हैं उसमें कितना दम है ! वैसे सरकारी आंकड़े सिर्फ पचास हज़ार की संख्या तक सीमित हैं।

आने वाला समय इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये हितकारी होगा और भारत वर्ष में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों को वही सम्मान मिलेगा जो अन्य प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों के चिकित्सकों को प्राप्त हैं।

पूर्वान्चल इलेक्ट्रो होम्योपैथिक सम्मेलन
जौनपुर में कराने की तैयारी

पूर्वान्चल के इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों का मान बढ़ाने व चिकित्सकों में और जागरुकता लाने के उद्देश्य से जौनपुर जनपद में शीघ्र ही पूर्वान्चल इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक सम्मेलन का आयोजन किया जायेगा यह जानकारी बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 द्वारा आयोजित प्राचार्यों/अध्ययन केन्द्रों के प्रमुखों की बैठक में जौनपुर से पधारे भगवान महावीर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक इन्सटीट्यूट के प्राचार्य डा0 प्रमोद कुमार मौर्या ने दी, डा0 मौर्या के अनुसार उत्तर प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के सर्वाधिक चिकित्सक पूर्वान्चल क्षेत्र से आते हैं इन चिकित्सकों के यहां प्रति दिन काफी संख्या में रोगी आते हैं और रोगमुक्त होकर जाते हैं, इस तरह से पूर्वान्चल के इलेक्ट्रो होम्योपैथिक पद्धति के ये चिकित्सक सरकार को परोक्ष रुप से स्वास्थ्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

सामान्य से लेकर गम्भीर बीमारियों तक के रोगी इस चिकित्सा पद्धति से स्वास्थ्य लाभ निरन्तर ले रहे हैं, इन्हीं चिकित्सकों के सम्मान को बढ़ाने के लिये हम पूर्वान्चल इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक सम्मेलन का आयोजन करने जा रहे हैं, इस आयोजन की गरिमा को बढ़ाने के लिये माननीय केशव प्रसाद मौर्या उप मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश सरकार से कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिये सम्पर्क किया जा रहा है, विशिष्ठ अतिथि के रुप में माननीय स्वामी प्रसाद मौर्या श्रम मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार की कार्यक्रम में सम्मिलित होने की पूरी सम्भावना है, इन राजनीतिज्ञों के अतिरिक्त इस कार्यक्रम में डा0 एम0 एच0 इदरीसी0 चेयरमैन बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0, डा0 प्रमोद शंकर बाजपेई महासचिव इहमाई व डा0 अतीक अहमद रजिस्ट्रार बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0, डा0 मिथलेश कुमार मिश्रा संयुक्त मंत्री इहमाई के सम्मिलित होने की सहमति प्राप्त है।

रोशनी की तलाश में

प्रकाश का जीवन में बहुत महत्व है, बिना प्रकाश जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती, प्रकाश की एक किरण घनघोर अंधेरे को चीर कर अपनी उपस्थिति बता देती है। किसी कवि ने कहा है कि अंधकार की सीमा में ही स्वागत पाता है प्रकाश परन्तु वास्तविक संदर्भों में प्रकाश की प्रतीक्षा हर व्यक्ति को रहती है। " इलेक्ट्रो होम्योपैथ भी अपने जीवन में प्रकाश चाहते हैं "।

इसी प्रकाश की चाहत में हम और हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथ साथी वर्षों से संघर्षरत हैं परन्तु जिस प्रकाश की अपेक्षा हमें है वह दूर–दूर तक नज़र नहीं आता है, ऐसा नहीं है कि हम घनघोर तिमिर में जी रहे हों परन्तु जितनी रोशनी हम तक आ रही है वह वर्तमान परिस्थितियों में काफ़ी नहीं है, क्योंकि जिस तरह का प्रकाश अन्य प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों को प्राप्त हो रहा है उनकी तुलना में हमारे पास पहुँचने वाले प्रकाश का अंश बहुत न्यून है।

अब तो स्थिति यह हो गई है कि यह न्यूनता न्यूनतम नज़र आ रही है, कहने को तो कोई कुछ भी कह ले परन्तु आज की सच्चाई यही है और इसी प्रकाश की तलाश में हम सब इधर–उधर भटक रहे हैं, कुछ लोग इसे हमारी मृगतृष्णा का नाम दे रहे हैं जबकि मृगतृष्णा में भटकाव होता है और हमारा प्रयास वास्तविकता की तरफ़ है।

प्रकाश को पाने के लिये वैचारिक मज़बूती की आवश्यकता है जो शनै–शनै हमारे साथियों के मन से निरन्तर कमज़ोर होती जा रही है, हमें भटकाव से मुक्ति पा कर अपना मन उद्देश्य की तरफ़ केन्द्रित करना है इसी से सफ़लता निश्चित है। भटकाव उन्हीं को होता है जिनके मन स्थिर नहीं होते हैं, यदि हम यह स्वीकार कर लें कि जो सर्वस्वीकार्य है उसी रास्ते पर चलेंगे तो निराशा और भटकाव दूर–दूर तक नहीं आयेंगे, चूँकि प्रकाश कभी भी भेद–भाव नहीं करता, अमीरों के महलों से लेकर गरीबों की कुटिया तक समान रुप से पहुँचता है, अब यह अपना–अपना भाग्य है कि कौन कितना ले पाता है, अभी तक यह अटल सत्य है कि सूर्य पूर्व में ही निकलता है और अस्त पश्चिम में ही होता है, जो पूर्व के सूरज से प्रकाश की अपेक्षा करता है उसे प्रकाश कभी निराश नहीं करता और जो दक्षिण से प्रकाश की अपेक्षा करता है तो उसे तब तक प्रतीक्षा करनी होती है जब तक सूर्य दक्षिणायण नहीं होता।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी का सूरज वर्षों से चमक रहा है यह अलग बात है कि उसका प्रकाश अभी जन–जन तक नहीं पहुँचा परन्तु यदि सकारात्मक प्रयास निरन्तर होते रहते हैं तो यह प्रकाश जन–जन तक भी पहुँचेगा, हमारी सोच सार्थक और सकारात्मक होनी चाहिये, मन में बैठे अंधेरे को दूर कर ज्ञान रुपी दीपक जलायें स्वंय प्रकाशमान हों एवं दूसरों को भी प्रकाशित करें।

जीवन में निराशा के लिये कोई रिक्त स्थान नहीं होना चाहिये सदैव उत्साह व ऊर्जा भरी सोच हो, आप उन लोगों से अलग हों जो कहते हैं कि तुम्हें ज़िन्दगी के उजाले मुबारक, अंधेरे हमें आज रास आ गये हैं, यह उनका फलसफ़ा हो सकता है जो अपने कार्यों से मायूस हैं और इस क़दर निराश–हताश हो चुके हैं कि जिस स्थिति में हैं उसे ही नियति मान चुके हैं, परन्तु आज जो परिस्थितियां हमें दृष्टिगोचर हो रही हैं वह कुछ अलग ही कहानी कह रही हैं।

आज हमारे सभी साथी प्रकाश की तलाश में लगे हैं यह अलग बात है कि वह किस तरह का प्रकाश तलाश रहे हैं, वास्तविक प्रकाश या आभासी प्रकाश, प्रकाश कोई भी हो पर वह अपनी गति नहीं बदलता वास्तविक प्रकाश में भी छाया बनती है और आभासी में भी, यह अलग बात है कि एक बिम्ब कहलाता है और दूसरा प्रतिबिम्ब, अब यह हमारा दायित्व है कि हम इतने सतर्क रहें कि बिम्ब को मूक प्रतिबिम्ब छलने न पाये।

वर्तमान समय में इलेक्ट्रो होम्योपैथी में हर जगह छलावा सा नज़र आ रहा है ! कौन क्या कहता है ?क्या करता है ? इसपर कोई भरोसा नहीं है, लोग अपने ही दायरे तोड़ रहे हैं, अपने आपको स्थापित करने के मोह में यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक बलि चढ़ जाये तो भी कोई गुरेज़ नहीं है यह प्रचलन इतनी तेज़ी से बढ़ा है कि लोग एक दूसरे की नकल करने लगे हैं, इस नकल से उनको क्या लाभ है ?यह तो नकल करने वाले ही जानें, हर एक चीज़ की एक सीमा होती है इसलिये कभी न कभी इसकी भी सीमा समाप्त होगी।

हमारा प्रयास है कि वर्तमान में जो प्रयास चल रहे हैं उसमें पारदर्शिता,प्रमाणिकता और स्थायित्व का समावेश हो और इस प्रकाश पर्व पर सबको इतना प्रकाश मिले कि खुशी हो।

बेचारगी में फंसी इलेक्ट्रो होम्योपैथी

शब्द बेचारा इतना निम्न स्तर का माना जाता है कि जहाँ कहीं भी बेचारा शब्द का प्रयोग हो जाता है वहीं पर जिस संदर्भ में इस शब्द का प्रयोग किया गया होता है उस संदर्भ का महत्व स्वतः ही कम हो जाता है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये यह शब्द कहीं से भी उचित नहीं है परन्तु जिस तरह की परिस्थितियां निरन्तर निर्मित हो रही हैं वह बेचारा जैसा दृश्य ही उपस्थित कर रही हैं, सबकुछ होने के उपरान्त भी यदि बेचारगी नज़र आये तो उसके विषय में शब्द ही ढूँढे नहीं मिलते, पूर्व से लेकर आज तक यदि हम इलेक्ट्रो होम्योपैथी का सिंहावलोकन करें तो हमें इलेक्ट्रो होम्योपैथी कहीं भी कमज़ोर नहीं दिखाई पड़ेगी, अपने उद्भवकाल से लेकर आज तक विकास की जो सीढ़ियां इलेक्ट्रो होम्योपैथी ने चढ़ी हैं कदाचित असमान्य परिस्थितियों में वह कभी सम्भव नहीं था।

जब तमाम सारे वैज्ञानिक मानवता की सेवा के लिये ऐलोपैथी का विकल्प ढूँढ रहे थे उस समय भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक अलग पहचान के साथ उपस्थित हुई, जो लोग यह कहते हैं कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक रहस्यमयी पद्धति है शायद वह महात्मा मैटी के उन सिद्धान्तों का रहस्य समझ ही नहीं पाये जिसको वह दुनिया को समझाना चाहते थे, मैटी की दुनिया में न तो कोई रहस्य है और न ही कोई तिलस्म जो कुछ भी है दर्पण की तरह साफ़ एवं स्पष्ट ! जब तक मैटी जीवित रहे उनहोंने निरन्तर इस पैथी के विकास के लिये कार्य किये, मैटी धन्यवाद के पात्र इसलिये भी हैं क्योंकि जब मैटी ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी को प्रतिपादित किया उस समय डा0 सैम्युएल हैनिमन द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों के आधार पर हाम्योपैथी चिकित्सा पद्धति की चमक ज़ोरों पर थी, हर तरफ़ होम्योपैथी की ही चर्चा हुआ करती थी, ऐसा नहीं है कि मैटी जी इससे प्रभावित नहीं हुये परन्तु मैटी पर जो प्रभाव पड़ा वह यह था कि उस समय की होम्योपैथी अपने आप में पूर्ण नहीं थी, जब लोग ऐलोपैथी का विकल्प ढूँढ रहे थे तब मैटी ने होम्योपैथी के समानान्तर इलेक्ट्रो होम्योपैथी को लाकर खड़ा कर दिया ! वही रुप, वही रंग, बदला बदला सा अगर कुछ था तो वह था दवा बनाने का ढंग परन्तु जैसा कि प्रकृति का नियम है कि शक्तिवान से टक्कर लेने में कुछ समय तो लगता ही है।

हैनीमन के समर्थक और साथी इतने मज़बूत थे कि उन्होंने होम्योपैथी को कमज़ोर नहीं होने दिया इधर मैटी के पास कोई वारिस नहीं था, वेन्ट्रोली मैटी के नाम पर जो मैटी का उत्तराधिकारी था वह इतना सक्षम और समर्पित नहीं था इसके पीछे जो कारण उभर कर आते हैं वह यह संकेत देते हैं कि सम्भवतः वेन्ट्रोली मैटी की पृष्ठभूमि चिकित्सा जगत से नहीं थी और न ही उनके अन्दर चिकित्सा विधा सीखने की कोई जिज्ञासा, तभी तो उन्होंने मैटी की विरासत मैटी के अनुनायियों को सौंप दी, यह तो इलेक्ट्रो होम्योपैथी की योग्यता थी जो उसने अपनी चमक नहीं खोई, जब भी कोई अवसर प्राप्त हुआ इस चिकित्सा पद्धति ने अपनी उपयोगिता और प्रमाणिकता दोनों ही सिद्ध की।

अनेकों विसंगतियों के उपरान्त भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी खोई नहीं वरन इसका जादू लोगों के सर पर बोलता रहा और इसी प्रभाव के बल पर यह चिकित्सा पद्धति भारतवर्ष में अपने आपको स्थापित करने में सफ़ल हुई, जिस समय इस चिकित्सा पद्धति का भारत में प्रवेश हुआ था उस समय का भारत आज का भारत नहीं था, अखण्ड भारत जिसमें पाकिस्तान, बांगलादेश सहित नेपाल, सीलोन (अब श्रीलंका), बर्मा (अब म्यांमार), भूटान एवं मालद्वीप सहित बहुत सारे युरोपीय देशों में इस पद्धति की अपनी चमक सुनाई पड़ती थी।

इतनी सक्षम और प्रभावी पद्धति आज भारत में बेचारगी की सी स्थिति में है यह बात सुनने में एवं देखने में कष्ट देती है परेशानियां कितनी भी आई हों परन्तु इलेक्ट्रो होम्योपैथी कभी भी इतनी हताश और निराश नहीं दिखी जितनी की आजकल दिखाई पड़ रही है, यदि हम गुज़रे 10 वर्षों का आंकलन करें तो सर्वाधिक परिवर्तन इन्हीं 10 वर्षों में हुआ है, चाहे वह चिकित्सा का क्षेत्र हो, शिक्षा का क्षेत्र हो या फिर अधिकारों के प्रति जागरुकता का क्षेत्र हो,सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व परिवर्तन आया है, आन्दोलन में भी आमूल–चूल परिवर्तन हो चुका है, जिन हाथों में नेतृत्व था उनसे फिसलकर यह आन्दोलन ऐसे लोगों के पास चला गया जिन्होंने आन्दोलन तो किया परन्तु न तो आन्दोलन को धार दे सके और न ही आन्दोलन को कोई दिशा। दिशाहीन आन्दोलन की गति कभी भी स्थिर नहीं रहती जिससे कि जो वातावरण निर्मित होता है वह अनुत्साह को जन्म देता है, कमोबेश इलेक्ट्रो होम्योपैथी आज इसी स्थिति से गुज़र रही है 05–05–2010 को भारत सरकार ने जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संचालन के लिये स्पष्टीकरण दिया व 21 जून, 2011 को भारत सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सा, शिक्षा एवं अनुसंधान के लिये दिशा निर्देश जारी कर सोये इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नेतृत्वकर्ताओं में एक नया जोश भर दिया।

2004 से 2012 तक की इलेक्ट्रो होम्योपैथी की अघोषित बन्दी ने तत्कालीन इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संचालकों को मानसिक रुप से काफ़ी जर्जर कर दिया जिसका लाभ दूसरे पंक्ति के नेताओं ने उठाया, दूसरे पंक्ति के नेता अपने साथियों के मन में यह बिठाने में सफ़ल हो गये कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का भला उनके द्वारा ही होगा इसलिये लोगों का जुड़ाव ऐसे लोगों से हुआ, इन नवोदित नेताओं ने पुरानी पीढ़ी के नेताओं को इतना बदनाम किया कि लोगों के मन में उनके प्रति श्रद्धा का भाव भी नहीं रहा।

धीरे–धीरे आन्दोलन का स्वरुप बदलता गया या यह कहें कि धीरे–धीरे यह आन्दोलन बदरंग सा हो गया, इसका बहुत कुछ श्रेय हमारे पुराने साथियों को भी जाता है जो इस परिवर्तन का प्रतिरोध नहीं कर सके, उन्होंने अपने आप को इतना थका, हारा व नाकारा मान लिया था कि शान्त रहना ही उचित समझा। शायद यही कारण था कि लोगों ने इसे आत्म समर्पण जैसा समझा जिसका भरपूर लाभ हमारे नये साथियों ने लिया और मन माने ढंग से आन्दोलन को चलाया, ऐसा नहीं है कि इन साथियों ने सब कुछ उलटा–सीधा ही किया हो इन्होंने जो कुछ भी किया उसमें अधकचरे पन के दर्शन होते हैं और जो कुछ भी चिकित्सकों को बताया गया वह कुछ ऐसा था कि अब कुछ मिलने ही वाला है।

खोना और पाना हमारे कार्यों और प्रयासों पर निर्भर करता है हमें कब क्या मिलेगा यह सरकार की व्यवस्थाओं पर निर्भर करता है व्यवस्थाओं में हम परिवर्तन तो नहीं कर सकते लेकिन व्यवस्थाओं की पूर्ति में सहयोग अवश्य कर सकते हैं इसलिये जो भी परिस्थितियां हैं हमें उनका सामना करना है और यह प्रयास भी करना है कि प्रयासों से परिस्थितियों को अपने अनुकूल करें, यह निश्चित मान लें कि प्रतिकूलता अब नहीं आयेगी समय की प्रतीक्षा करें और बेचारगी से दूर रहें। दीपावली के इस पर्व पर लक्ष्मी जी हमारे घर आयें।

क़तरा , क़तरा – रोशनी

रोशनी की इच्छा हर जीवधारी को होती है प्राणी जगत और वनस्पति जगत दोनों ही क्षेत्रों में प्रकाश की महती आवश्यकता होती है क्योंकि बिना प्रकाश के जीवन सम्भव नहीं है, अन्धकार और प्रकाश दोनों का अपना अलग–अलग स्थान है परन्तु जो आवश्यकता प्रकाश की है उसकी तुलना में अन्धकार उतना महत्व नहीं रखता, जीवधारी तो प्रकाश से जीवन पाते ही हैं परन्तु पेड़– पौधे तो पूर्ण रुप से प्रकाश पर ही आश्रित हैं, प्रकाश ही उनके जीवन का स्रोत है, जो हरियाली हमारे मन को भाती है वह क्लोरोफिल प्रकाश से ही निर्मित होता है, शैवाल और कवक के निर्माण में प्रकाश का अपना अलग महत्व है, अनेकों ऐसे पौधे हैं जिनकी वृद्धि और विकास उसी तरफ होता है जिधर से प्रकाश प्राप्त होता है, दूसरे शब्दों में प्रकाश ऊर्जा का स्रोत है और इसी ऊर्जा को संग्रहित करके रोशनी बनती है इसका साधारण सा उदाहरण है सोलर सिस्टम।

विश्व के लगभग सभी देशों में बिजली की निरन्तर माँग को देखते हुये वैज्ञानिकों ने सौर ऊर्जा के माध्यम से प्रकाश की उपलब्धता की है, बहुत सारे ऐसे उपकरण हैं जो प्रकाश से ही संचालित होते हैं, मानव शरीर को भी प्रकाश रुपी ऊर्जा की अति आवश्यकता होती है बढ़ते हुये शहरीकरण के कारण मनुष्य ने बहुखण्डीय आवासीय व्यवस्था की कल्पना की और उसे मूर्त रुप भी दिया।

विकास तो हुआ जगह की समस्या का समाधान भी हुआ परन्तु एक महत्वपूर्ण कमी भी आई अंधाधुन्ध शहरीकरण व उच्च अट्टालिकाओं के कारण हर आवासीय क्षेत्र में प्रकाश की किरणें नहीं पहुँच पाती हैं, इस प्रकाश की अनुपलब्धता के कारण मानव शरीर में बहुत सारी व्याधियां जन्म ले रही हैं, महिलाओं में "विटामिन डी" की कमी बहुतायत से पाई जाने लगी है, बच्चों में मन्दबुद्धि की बीमारी फैल रही है, इसी प्रकाश की ही कमी से कुपोषण की समस्या सामने आ रही है, बहुत दिनों तक अन्धकार का साथ देने से पुरुषों में डिमेन्शिया (एक प्रकार के भूलने की बीमारी) जैसे रोग की वृद्धि हो रही है जिससे कि जीवन में नीरसता पैदा होती है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में प्रकाश की आवश्यकता क्यों है ?इस विषय पर विमर्श होना चाहिये इलेक्ट्रो होम्योपैथी में प्रकाश से तात्पर्य ज्ञान का प्रकाश है, जागरुकता का प्रकाश है,जब तक ज्ञान और जागरुकता का विकास नहीं होता तब तक सम्पूर्ण विकास की कल्पना भी कल्पना के रुप में धरी की धरी रह जाती है।

अब तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी में विकास की जितनी भी योजनायें बनाई गयी हैं वे सफल क्यों नहीं हो पाती हैं ?ऐसे कौन से कारक हैं जो इन योजनाओं को आकार लेने से पूर्व ही धूल–धूसरित कर देते हैं, कहने को तो यह अटपटा सा लगता है परन्तु यदि वास्तविक दृष्टि से इसे देखा जाये तो अभी तक यह एक अनुत्तरित प्रश्न है।

यक्ष के प्रश्नों के भी उत्तर युधिष्ठिर ने दिये थे इसलिये जो लोग ऐसे विचारों को अनुत्तरित मानते हैं उन्हें अपनी मानसिकता में परिवर्तन लाना चाहिये, इलेक्ट्रो होम्योपैथी का क्षेत्र बहुत बड़ा है, काम करने के अनेकों रास्ते भी हैं, कल भी काम हो रहा था, आज भी काम हो रहा है और कल भी काम होता रहेगा परन्तु काम की गति और उसकी स्वीकारिता दोनों ही विकास के लिये अति आवश्यक हैं यदि इनकी पूर्ति नहीं होती है तो हममें से कोई भी विकास की धारा का आनन्द नहीं उठा सकेगा।

वर्तमान में जितने लोग भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन से जुड़े हैं उन सबका एक ही लक्ष्य और एक ही उद्देश्य है कि ऐन–केन प्रकारेण इलेक्ट्रो होम्योपैथी को शासकीय संरक्षण प्राप्त हो और हमारी इस प्यारी चिकित्सा पद्धति को जनता के बीच वही प्यार व दुलार प्राप्त हो जो अन्य मान्यता प्राप्त पद्धतियों को प्राप्त है, इससे हमारे चिकित्सकों में एक नया उत्साह पैदा होगा और जो

कुछ भी कर गुज़रने की इच्छा उनके मन में हिलोरें ले रही हैं उसे वे पूरा कर सकेंगे, तमाम विकास के उपरान्त भी समाज के बुद्धजीवी व तार्किक व्यक्तित्व वाले व्यक्ति हमारी उपेक्षा न कर सकेंगे और जो आज हमारे दावों का मज़ाक उड़ाते हैं कल वही आपके समर्थक होंगे और सशक्त इलेक्ट्रो होम्योपैथी, समर्थ इलेक्ट्रो होम्योपैथी का सपना भी पूरा हो सकेगा।

आज से कुछ वर्ष पहले भले ही इस तरह के सपने देखने वालों को मूर्ख या सनकी समझा जाता था और इस तरह के सपने दिखाने वालों को लोग पाखण्डी के रुप में प्रचारित करते थे लेकिन परिवर्तन की बयार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी को जो छुआ तो धीरे–धीरे सब कुछ बदलने लगा 28 फरवरी, 2017 को भारत सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी को जो सौगात दी है उसे सहेजना हमारा काम है, सरकार ने हमें पूरे 10 महीनों का लम्बा समय दिया है इस समयावधि में जो सरकार को अपेक्षित है उसकी प्रपूर्ति हमें करनी होगी लेकिन हमारे साथी जिस तरह से इस प्रपूर्ति की पूर्ति कर रहे हैं कभी–कभी तो ऐसा लगने लगता है कि शायद हर कोई हड़बड़ी में है।

मार्च 2017 के कालखण्ड में जो कुछ भी घटित हुआ उससे हमें प्रेरणा लेनी चाहिये थी लेकिन शायद समय के उस संकेत को हम समझ नहीं पा रहे हैं, माननीया मंत्री जी का बयान जोकि असमय आया उसने एक बार पूरे देश को झकझोर के रख दिया लगभग सभी नेता हतप्रभ से हो गये, चिकित्सकों में हताशा सी व्याप्त होने लगी थी लेकिन जो लोग समय के साथ चलते हैं और हर कार्य वातावरण और काल के अनुकूल करते हैं वे प्रतिकूल परिस्थितियों को भी समय आने पर अनुकूल बना लेते हैं, इस कार्य के लिये निश्चित रुप से बधाई के पात्र हैं बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्यो पैथिक मेडिसिन,उ0प्र0 के वे अधिकारी जिन्होंने सूझ–बूझ का परिचय देते हुये जागरुकता की एक ऐसी रणनीति तैयार की जिससे उत्तर प्रदेश ही नहीं अपितु पूरे देश का वातावरण बदल गया है, ताबड़– तोड़ प्रेस वार्ताओं व आक्रामक नीति के चलते हमारे चिकित्सिकों का न केवल खोया हुआ आत्म विश्वास वापस आया है अपितु हमारे जो साथी संघर्षरत थे उनके अन्दर भी आशा का संचार हुआ है, दबे स्वर से ही सही अब लोग यह मानने लगे हैं कि इलेक्ट्रो होम्यो पैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया (इहमाई) अपने अकेले बलबूते इलेक्ट्रो होम्योपैथी को शासकीय मान्यता का मार्ग प्रशस्त करेगी और सबके सपने पूरे होंगे, हम जो आज क़तरा–क़तरा रोशनी पा रहे हैं वह तिमिर को हटाकर एक प्रकाश पुंज की तरह दैदीप्यमान होगी।

कभी भी निराशा को अपने ऊपर शासन मत करने दीजिये और ऐसे लोगों से भी दूर रहिये जो निराशा का वातावरण पैदा करते हैं, हमारे कुछ साथी आज भी यह कहते हैं कि कुछ नहीं होना, ऐसे निराश लोगों को हम जीवन देने की प्रतिबद्धता से पीछे नहीं हट रहे हैं जो लोग यह कह रहे हैं कि जो संगठन निरन्तर आगे बढ़ रहा है वह बाकी बचे हुये लोगों का अस्तित्व समाप्त कर देगा उनकी यह कल्पना निराधार है।

हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिये कि पहचान कभी नहीं मिटती, गंगा और यमुना के गोद में समाई सरस्वती दिखाई भले ही न देती हो परन्तु जब संगम की चर्चा होती है तो गंगा और यमुना के साथ सरस्वती का नाम भी सम्मान से लिया जाता है, हम यह क्यों भूल जाते हैं कि सब कहीं न कहीं एक जगह ही विलीन होते हैं, गंगा, जमुना, सरस्वती, कावेरी, नर्मदा,गोदावरी, सरयू, गंडक, छोटी बड़ी सारी नदियां समुद्र से जा मिलती हैं लेकिन अपनी पहचान नहीं खोतीं, जिस दिन हम यह विचार आत्मसात कर लेंगे उस दिन किसी को कोई परेशानी नहीं होगी इलेक्ट्रो होम्योपैथी सागर के समान है जिससे निकली हुई धारायें हैं, हर प्रदेश के इलेक्ट्रो होम्यो– पैथिक के संगठन और उनके साथी, आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित करने के लिये हमें उतनी मेहनत नहीं करनी है जितनी की मेहनत उसे प्रमाणित करने की है।

आप गम्भीरता से चिन्तन करें तो 28 फरवरी, 2017 को भारत सरकार द्वारा नियमितिकरण हेतु प्रेषित पत्र इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थापना की स्पष्ट स्वीकृति है, अब सरकार यह चाहती है कि जो इसके संचालकगण हैं वे इसका प्रमाणीकरण करें, आन्दोलन की दिशा सही दिशा में होनी चाहिये दीपावली के इस पावन पर्व पर राम के विजय पर चिन्तन करें कि राम ने वनगमन के बाद दक्षिण की दिशा ही क्यों चुनी ? यह चिन्तन हमें सारे प्रश्नों का उत्तर दे देगा और निश्चित रुप से आने वाला वर्ष इलेक्ट्रो होम्योपैथी में वर्षों से जमें अंधियारे को दूर करेगा और वर्षों के बाद एक स्थायी खुशी हम सबके द्वार होगी यह न तो कल्पना है और न ही अति आत्मविश्वास जो कुछ आज दिख रहा है कल आपको भी दिखेगा। इसी मंगल कामना के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया व बोर्ड ऑफ मेडिसिन, उ0प्र0 की ओर से सभी साथियों को

'शुभ दीपावली।'

1– डा0 प्रमोद शंकर बाजपेई फिरोजाबाद में प्रेस वर्ता करते हुए। 2 एवं 3 में उपस्थित इलेक्ट्रोहोम्योपैथ। 4– डा0 बलवीर सिंह अपने विचार देते हुए — छाया गज़ट

(सम्बंधित समाचार पेज 4 पर देखें)

संघर्ष रंग ला रहा है – डा0 प्रमोद बाजपेई

इलेक्ट्रो होम्योपैथों के द्वारा किया जा रहा संघर्ष धीरे–धीरे रंग ला रहा है हमारे साथी केवल संघर्ष ही नहीं कर रहे हैं बल्कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियों के द्वारा चिकित्सा व्यवसाय कर रहे हैं,मानवता की सेवा भी कर रहे हैं पर लगातार सरकार की ढुलमुल नीतियों के कारण इलेक्ट्रो होम्योपैथी को अभी तक वह स्थान प्राप्त नहीं हो सका है जो प्राप्त होना चाहिये यह विचार इलेक्ट्रो होम्योपैथी की वर्तमान स्थिति पर चर्चा हेतु फिरोजाबाद में आयोजित पत्रकार वार्ता में बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के प्रवक्ता डा0 प्रमोद शंकर बाजपेयी ने व्यक्त किये, बाजपेई ने कहा कि एक बार सरकार पुनः सक्रिय हुई है और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के रिगुलेशन के लिए लोगों से प्रपोज़ल मांगे हैं 30 दिसम्बर तक प्रपोज़ल भेजने की अन्तिम तिथि निर्धारित कर दी है, इस अन्तिम तिथि के बाद सरकार एक कमेटी गठित करेगी जो प्रपोज़लों का निरीक्षण कर अन्तिम निर्णय ले लेगी। डा0 बाजपेयी ने मांग की कि सरकार को जो भी करना हो शीघ्र करे कमेटियों का जाल अब हमें स्वीकार नहीं है जो भी निर्णय लेना हो निर्णय ले लें लाखों चिकित्सकों के भविष्य को बहुत दिनों तक लटकाया नहीं जाना चाहिये।

इस प्रेस वार्ता में डा0 शिवकुमार पाल, डा0 नरेन्द्र भूषण निगम, डा0 अशोक कुमार, डा0 बलवीर सिहं, डा0 सलीम अहमद, डा0 इश्तेयाक आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

इसी क्रम में हाथरस जनपद के सादाबाद में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों की एक जनपद स्तरीय बैठक आयोजित की गयी जिसकी अध्यक्षता डा0 रमेश चन्द उपाध्याय ने की, कार्यक्रम का प्रारम्भ मैटी के चित्र पर माल्यापर्ण व दीप प्रवज्जलन मुख्य अतिथि डा0 प्रमोद शंकर बाजपेयी द्वारा किया गया, इस अवसर पर विभिन्न वक्ताओं ने इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों की समस्याओं पर चर्चा की कार्यक्रम के संयोजक डा0 नेम सिंह ने चिकित्सकों के मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में पंजीयन न होने की बात उठायी, डा0 हरेन्द्र सिंह ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों की एकता की बात करते हुए कहा कि अब समय आ गया है कि सब लोग एक हो जाओ और पैथी हित की बात करो।

कार्यक्रम में जोश भरते हुए डा0 मौलीश्री बघेल ने कहा कि डरने की कोई बात नहीं है आपको चिकित्सा करने का पूरा अधिकार है, उन्होंने ज़ोरदार शब्दों में कहा कि किस तरह से मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय ने उन्हें प्रताड़ित किया जिनका उन्होंने मुकाबला किया कि आज खुलकर प्रैक्टिस कर रही हूँ दूसरी महिला वक्ता डा0 सुनीता सिंह ने कहा कि हमें पूरा भरोसा है कि आने वाले दिन अच्छे होंगे, अध्यक्षता कर रहे डा0 रमेश चन्द उपाध्याय ने कहा कि आज हमें पुराने दिन याद आ रहे हैं जब सादाबाद में एक–एक बैच में 100–150 बच्चे रहते थे और ऐसा लगता था कि कोई मेडिकल कालेज चल रहा है। एक बार उम्मीद फिर बंधी है मैं बधाई देता हूँ डा0 प्रमोद शंकर बाजपेयी को जो अपने व्यस्ततम कार्यक्रम के उपरान्त भी यहां आये।

कार्यक्रम का संचालन डा0 बहादुर अली ने किया।

सादाबाद ज़िला हाथरस में गोष्ठी करते हुये बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के प्रवक्ता डा0 प्रमोद शंकर बाजपेई उनके बायें डा0 नेम सिंह बघेल एवं डा0 रमेश चन्द उपाध्याय – छाया गज़ट

कार्य ही रेगुलेशन का ...... प्रथम पेज से आगे

लाभ हो उसके शरीर पर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधियों का कोई प्रतिकूल प्रभाव न पड़े तभी तो सुरक्षा की बात सच साबित होगी ।

दूसरा बिन्दु है viavlity अर्थात उपयोगिता। उपयोगिता सिद्ध करने के लिये भी हमारे कार्यों का मूल्यांकन हो जो दावे किये जाते हैं कि साध्य और असाध्य दोनों तरह के रोगों पर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधियां प्रभावी हैं और इनका प्रभाव तात्कालिक के साथ–साथ स्थायी और दूरगामी भी होता है परन्तु आज तक का इतिहास है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति लगातार उपेक्षा का शिकार होती रही है, अब भारत सरकार ने एक बार फिर से यही बात दोहरायी है अब सरकार के सामने दो ही विकल्प हैं या तो वह हमारे दावों को स्वीकार करे या फिर ऐसे किसी प्राधिकरण का गठन करे जो हमारे कार्यों का मूल्यांकन कर सके अब यह सरकार पर निर्भर करता है कि

जलाओ एक दिया देश के नाम

आपके अधिकारों की लड़ाई लड़ने वाला एक मात्र संगठन

Electro Homoeopathic Medical Association of India
(An Organization of Electro Homoeopathic Practitioners & Institutions)
Recognised by Government of India Ministry of Heath & Family Welfare
vide order No: C.30011/22/2010-HR Dated 21-06-2011
एक स्वायत्तशासी नियामक निकाय
E-mail : ehmaik@gmail.com website- www.behm.org.in

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

दीपावली की हार्दिक शुभकामनायें

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट